© UNIVERSAL RESEARCH REPORTS | REFEREED | PEER REVIEWED
ISSN : 2348 - 5612 | Volume : 05 , Issue : 02 | January – March 2018

प्रभा खेतान के उपन्यासों में स्त्री विमर्श

शोध–निर्देशक
अजय प्रसाद वर्मा
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
असम विश्वविद्यालय, दीफू कैम्पस
असम – 782460

शोधार्थी
हिटलर सिंह
पंजीयन संख्या 2751/15
दिनांकः 10.09.2015

ISSN : 2348-5612 © URR

20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में हिन्दी महिला उपन्यासकारों की सशक्त हस्ताक्षर के रूप में डॉ. प्रभा खेतान जी (1942–2010) का नाम बड़े ही आदर से लिया जाता है। उनका सम्पूर्ण जीवन ही स्त्री के हितों की पैरवी करते हुए बीता है। अपने जीवन के आरंभ से ही उन्होंने स्त्री को असहाय, बेबस, पराश्रित, भेदभावों को चुपचाप सहती हुई, उपेक्षा एवं शोषण के बीच पाया। फिर यह शोषण पारिवारिक, सामाजिक–सांस्कृतिक–धार्मिक हो या आर्थिक, मानसिक–शारीरिक हो या किसी भी स्तर का ही क्यों न हो, उन्होंने स्त्री को हर कहीं उपेक्षित एवं अपने अधिकारों से वंचित पाया है। प्रभा खेतान सामाजिक संस्थानों की नारी विरोधी प्रवृत्ति पर टिप्पणी करते हुए कहती हैं–''मगर पितृसत्तात्मक समाज की स्त्री–विमर्श परम्पराओं का आशय पूरी तरह विशिष्ट है। ये परम्पराएँ स्त्री को घर सौंपती हैं, बच्चों का भरण–पोषण सौंपती है। मानवता के नाम पर वृद्ध और बीमारों के लिए उससे निशुल्क सेवा लेती है और बदले में उसके द्वारा की गई सेवाओं का महिमा मंडन कर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री कर लेती है। स्त्री भूखी है या मर रही है इसकी चिंता किसी को नहीं होती....।''**1**

पिछले कई दशकों में विचारधारा और साहित्य की दुनिया को जिन विचारों ने सबसे अधिक प्रभावित किया है, उसमें 'स्त्री विमर्श' संबंधी कई प्रश्न प्रमुख रहे है। 'विमर्श' शब्द एक विस्तृत अर्थ लिए हुए है, जिसका निर्माण चिंतन, परामर्श, विचार–विनिमय, आलोचना, जॉच, अध्ययन आदि तत्त्वों से होता है। अंग्रेजी में स्त्री–विमर्श के लिए 'Feminism' शब्द का प्रयोग किया जाता है, जिसका शब्दकोषीय अर्थ है–''ऐसा विश्वास या सिद्धांत कि स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार और अवसर प्राप्त होने चाहिएँ।''**2** यहॉ समान अधिकार और अवसर से अर्थ सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक, वैधानिक आदि अधिकारों से है, जो पुरुषों को प्राप्त है। स्त्री विमर्श में पुरुषों के समान प्रतिष्ठा एवं अधिकारों की मांग की जाती है। विमर्श शब्द के साथ 'स्त्री' शब्द जुड़ जाने से यह तात्पर्य है कि स्त्री को केंद्र में रखकर उनकी समस्याओं को लेकर विचार–विनिमय करना अर्थात् उसके साथ होने वाले अन्यायों, शोषणों एवं उपेक्षताओं के कारणों की पड़ताल करना जो उनकी इस दयनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार है।

इससे स्त्रियों में आत्मबोध के साथ यह आत्मविश्वास जागृत हुआ है कि पितृसत्तात्मक व्यवस्था द्वारा तय की गयी दुनिया ही उसकी अंतिम दुनिया नहीं है, बल्कि उसकी भावनाओं और संभावनाओं की दुनिया इससे काफी बड़ी है। वह पुरुष पर आश्रित होने की अपेक्षा सशक्त होकर अपनी संभावनाओं को पूर्ण करती है। स्त्री विमर्श स्त्री के प्रति होने वाले शोषण के खिलाफ संघर्ष है। स्त्री–मुक्ति से उनका तात्पर्य है– स्त्री का खुद निर्णय करना, स्त्री का स्वायत्ता हासिल करना, जिसमें उसे अपनी जिंदगी को स्वयं संयोजित करने की स्वतंत्रता हो, स्त्री और पुरुष की समानता यानि लिंग के आधार पर विभेद का न होना, पुरुष वर्चश्ववाद व उनकी हिंसा का प्रतिरोध और नकार।

प्रभा खेतान ने कुल आठ उपन्यास लिखे हैं– आओ पेपे घर चलें, एड्स, अग्निसंभवा, छिन्नमस्ता, अपने–अपने चेहरे, तालाबंदी और स्त्रीपक्ष। उनके उपन्यासों के केंद्र में नारी की व्यथा–कथा है। उनके कथा साहित्य का कैनवास भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि विदेशों तक भी फैला हुआ है। अपने उपन्यासों में प्रभा खेतान जी ने पहली बार भारतीय मारवाड़ी स्त्री और विदेशी स्त्री की व्यथा को एक ही मंच पर लाकर खड़ा कर दिया है। उन्होंने वैश्विक धरातल पर बदलते हुए युग–बोध के साथ मारवाड़ी और विदेशी स्त्री की समस्याओं को अपने उपन्यासों का मुख्य विषय बनाया है। इस प्रकार स्त्री जीवन के विविध पक्षों की स्पष्ट व्याख्या प्रस्तुत करते हैं प्रभा खेतान के उपन्यास।

प्रभा खेतान जी के उपन्यास अर्थ और सेक्स की धुरी पर केंद्रित हैं। प्रभा जी के समस्त उपन्यास अपने परिवेश से प्रेरणा पाकर युगीन सत्य से हमें रूबरू करवाते हैं। उन्होंने अपनी सहज शैली में 'नारी' के विविध स्वरूपों द्वारा नारी विमर्श के विभिन्न प्रश्नों का यथार्थ चित्रण अपने उपन्यासों में किया है और दर्शाया है कि किस प्रकार प्रत्येक स्तर पर उसके साथ शोषणपूर्ण व्यवहार अपनाया गया है।

स्त्री का आत्मसंघर्ष अपनी निरंतरता में प्रत्येक युग में विद्यमान रहा है। परंपरागत दृष्टि से स्त्री के प्रति व्यवस्था का रवैया निश्चित मानदंडों, आदर्शों के नियत व्यवहारों से संचालित होता रहा है, जिसमें स्त्री को तय कर दी गयी भूमिका में निर्धारित आदर्श आचरण संहिता के अनुसार जीना पड़ता है, जिसके निर्धारण का अधिकार शताब्दियों से पुरुष ने अपने पास सुरक्षित रखा है। समय के बदलते तापमान में, बदलते सामाजिक संदर्भों में अपनी अधीनस्थ की भूमिका, शोषण, असमानता से मुक्ति के प्रयत्न एवं दोहरे मानदंडों के बीच अपनी बदलती सामाजिक भूमिका के बावजूद स्त्री के प्रश्न नहीं बदले हैं। स्त्री, पुरुष और व्यवस्था से जुड़े स्त्री–प्रश्न जटिलतर होते गए हैं। स्त्री विमर्श का सरोकार जीवन और साहित्य में स्त्री मुक्ति के प्रयासों से है। स्त्री की स्थिति की पड़ताल उसके संघर्ष एवं पीड़ा की अभिव्यक्ति के साथ–साथ बदलते सामाजिक संदर्भों में उसकी भूमिका, तलाशे गए रास्तों के कारण जन्मे नए प्रश्नों से टकराने के साथ–साथ आज भी स्त्री की मुक्ति का मूल प्रश्न उसके मनुष्य के रूप में अस्वीकारे जाने का प्रश्न ही है।

स्त्री की अस्मिता की लड़ाई आधी दुनिया को मनुष्य का दर्जा दिलाने की लड़ाई है। उसके मनुष्यत्व को स्वीकारना आज मानवता का सबसे बड़ा सवाल है। आज भी 'मनुष्य' की अवधारणा में स्त्री पुरुष दोनों को शामिल नहीं किया जाता। 'आओ पेपे घर चलें' में कैथी प्रभा से कहती है–''प्रभा, औरत अभी मनुष्य श्रेणी में नहीं गिनी जाती और तुम अमीर–गरीब का सवाल उठा रही हो ? राष्ट्र का भेद समझा रही हो ? माई स्वीट हार्ट ! हम सब अर्ध–मानव हैं। पहले व्यक्ति तो बनो, उसके बाद बात करना।''**3**

इस प्रकार सामाजिक शोषण के विभिन्न पहलुओं को उद्घाटित कर प्रभा खेतान इस सच्चाई का पर्दाफाश करती है कि स्त्री हर कहीं रौंदी गई, कुचली गई है। स्त्री को अपने व्यक्तित्व विकास के अवसरों से वंचित कर समाज उसे अपाहिज बनाए रखने में ही अपनी इतिश्री मानता रहा है। स्त्री के प्रति समाज के रवैये को पर्त–दर–पर्त उघाड़कर समाज के खोखलेपन की ओर लेखिका इशारा करती हैं।

प्रभा खेतान जी के उपन्यासों की नारी पात्र समाज द्वारा स्त्री के लिए बनाए गए पारंपरिक चौखटे का अतिक्रमण करती है। वह त्याग, समर्पण, ईमानदारी, प्रेम आदि शाब्दिक भ्रमों के चक्रव्यूह से निकलकर अपनी एक नई पहचान बनाती है। उनके लिए जिंदगी में पति, बच्चा और घर ही सब कुछ नहीं है, बल्कि उनके अनुसार इससे परे भी स्त्री की जिंदगी में बहुत कुछ हो सकता है। वह जिंदगी के नए अर्थ खोजने का प्रयास करती है।

प्रभा खेतान जी के अनुसार शिक्षा एवं आर्थिक सशक्तिकरण से नारी के सबलीकरण को ठोस आधार मिलता है। वह अपने अधिकारों एवं विकास के प्रति जागरूक होती है। सशक्तिकरण व संगठन की शक्ति से वह सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध खड़ी होकर समस्त नारी जाति के गौरव की रक्षा करने में सक्षम होती है। प्रभा खेतान जी के उपन्यासों की नारी अत्याचार, पीड़ा, संघर्ष, शोषण से गुजरकर भी एक महत्त्वाकांक्षी बनकर जीवन जीती नजर आती है। अपनी अध्यापिका से मिलते वक्त प्रभा इसी का खुलासा करती है–''नहीं, मेरी लड़ाई इसी समाज से चलेगी। आप नहीं जानती, बहन जी, औरत की सारी स्वतंत्रता उसके पर्स में निहित है।''**4**

व्यवसाय प्रभा खेतान के स्त्री पात्रों की आइडेंटिटी है। इसी सच्चाई को 'अपने अपने चेहरे' की रमा, 'आओ पेपे घर चलें' की प्रभा, कैथी, हेल्गा बेरी, एडिना, 'छिन्नमस्ता' की प्रिया, नीना आदि उजागर करती हैं। छिन्नमस्ता की प्रिया के लिए व्यवसाय उसकी पहचान है। व्यवसाय के जरिए प्रिया को सृजन और अभिव्यक्ति का सुख मिलता है। उसकी आत्मीयता का घेरा और अधिक विस्तृत होता है। इसी का खुलासा वह अपने पति नरेंद्र से करती है–''नरेंद्र, मैं व्यवसाय रूपये के लिए नहीं कर रही। हॉ, चार साल पहले जब मैंने पहले–पहल काम शुरू किया था, मुझे रुपयों की भी जरूरत थी। पर आज मेरा व्यवसाय मेरी आइडेंटिटी है। यह आए दिन की विदेशों की उड़ान..... यह मेरी जिंदगी के कैनवास को

बड़ा करती है। नित्य नए लोगों से मिलना–जुलना, जीवन के कार्य जगत को समझना। मुझे जिंदगी उद्देश्यहीन नहीं लगती।''**5**

प्रभा खेतान जी ने अपने उपन्यासों में स्त्री व्यक्तित्व की खोज में सबसे अधिक ध्यान उन स्त्रियों पर दिया है, जो पूरी तरह से जड़ सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था को सवालों के घेरे में खड़ा करती है। वह स्त्री से जुड़े विषयों पर पर्याप्त तर्क–वितर्क करते हुए उचित निष्कर्षों पर पहुँचती है। डॉ राजेंद्र यादव के शब्दों में–''सिर्फ सेक्स और सौन्दर्य का इस्तेमाल करते हुए ऊपर उठती नायिकाएँ चरित्रहीनों, वेश्याओं या अभिनेत्रियों की तरह चित्रलेखाएँ पहले भी आती रही हैं– मगर प्रतिभा और अस्मिता से लैस प्रिया पहली नारी है जो सामाजिक चुनौती की तरह उभरती है।''**6**

निष्कर्षतः प्रभा खेतान ही एक ऐसी उपन्यासकार हैं जिन्होंने स्त्री जीवन की विसंगतियों का गहराई से अध्ययन ही नहीं किया, बल्कि उन कारणों से संघर्ष करते हुए अपनी राह स्वयं बनाई है। उनके उपन्यासों की स्त्री पात्र अपने जीवन को अपने हिसाब से स्वरूप प्रदान करती, संघर्ष करती नजर आती हैं। वह समाज की उस मानसिकता का खंडन करती है जो स्त्री को सीमित दायरों में बांधकर उनके अस्तित्व विकास के लिए बाधा उत्पन्न करती है। इस प्रकार स्त्री विमर्श की भावना का वास्तविक स्वरूप प्रभा खेतान जी के उपन्यासों में प्रतिफलित हुआ है।

संदर्भ सूची –

1. खेतान, डॉ. प्रभा, उपनिवेश में स्त्री : मुक्ति कामना की दस वार्ताएँ, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2003, पृ. 15
2. ऑक्सफोर्ड इंग्लिश–इंग्लिश डिक्शनरी, प्रथम संस्करण, पृ. 437
3. खेतान, डॉ. प्रभा, आओ पेपे घर चलें, सरस्वती विहार, दिल्ली, 1990, पृ. 109
4. खेतान, डॉ. प्रभा, आओ पेपे घर चलें, सरस्वती विहार, दिल्ली, 1990, पृ. 71
5. खेतान, डॉ. प्रभा, छिन्नमस्ता, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 1993, पृ. 10–11
6. यादव, डॉ. राजेन्द्र, आदमी की निगाह में औरत, राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली, 2001, पृ. 220